OUR PUBLICATIONS

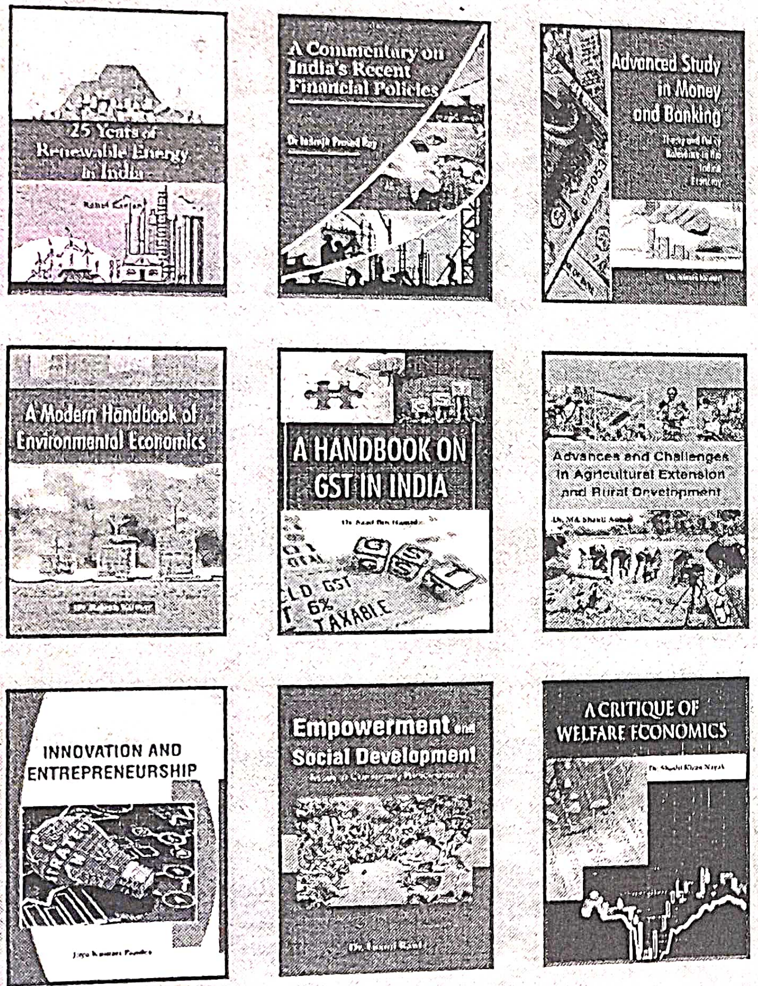

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

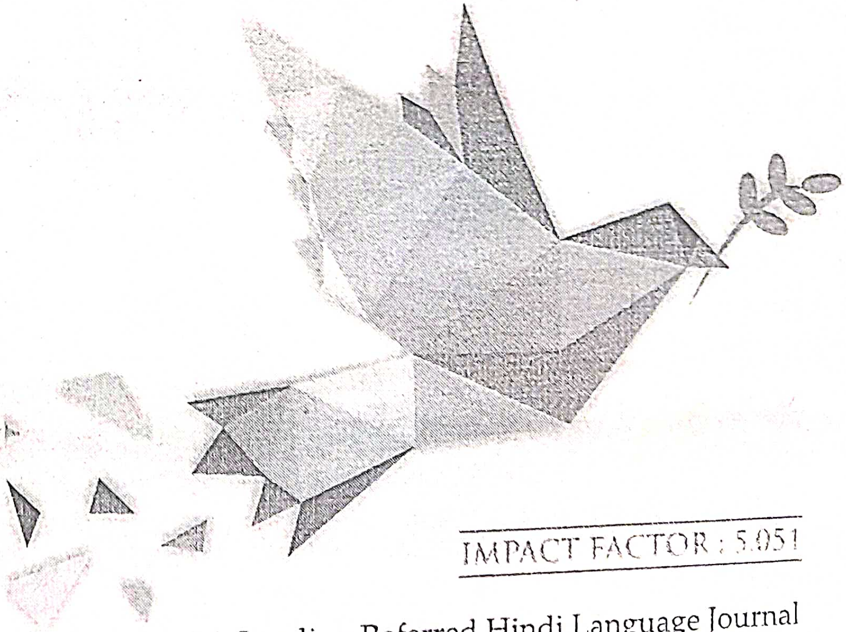

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Referred Hindi Language Journal

माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

सन्तोष कुमार गुप्ता

शोध छात्र, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी.जी. कॉलेज, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

डॉ० अनुभा शुक्ला

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी.जी. कॉलेज, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

संक्षिप्त सारांश

वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के निर्देशनों तथा शैक्षणिक व्यावसायिक एवं वैयक्तिक क्षेत्र में शिक्षकों की विशेष योग्यता अभिरुचि एवं उनमें उत्पन्न दक्षता को समझना अति आवश्यक समझा जाता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए अभिक्षमता, अभिरुचि, रुचि तथा दक्षता के परीक्षणों का निर्माण किया गया है। शिक्षा प्रणाली की कुशलता शिक्षकों की योग्यता, दशता, एवं प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का भी असफल होना अवश्य समभावी है। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने शिक्षण को प्रभावी बनाकर छात्रों को अध्ययन के प्रति जागरुक बनाने और उनमें ऐसी भावनाएँ विकसित करे की वे हर समय सीखने की जिज्ञासा रखे अर्थात् शिक्षण प्रभाविकता में ही शिक्षण के सिद्धान्त शिक्षण में उद्देश्य तथा शिक्षण के प्रतिमान निहित है। शिक्षण दक्षता से तात्पर्य है प्रभावाक रुप से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण अर्थात् पूर्व निर्धारित उद्देश्यो तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरस सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रुप से ऐसा शिक्षण जो रोचक हो आकर्षक हो तथा विद्यार्थियों को पूर्वलवलन प्रदान करता हो प्रभावी समझा जाता है शिक्षण दक्षता के साथ-साथ शिक्षक की अपने व्यवसाय के प्रति, प्रतिबद्धता भी शिक्षण कार्य को प्रभावित करता है। अतः शिक्षक की सकारात्मक व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता ही शिक्षण कार्य को सुगम बना सकता है।

मुख्य शब्दः- शिक्षण दक्षता, स्वनिर्मित मापनी, अभिवृळि मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, Cr~ मूल्य इत्यादि।

प्रस्तावनाः- मानव समाज भारतीय संस्कृति की सनातनता चिरस्थापित्वता और ओजस्विता से परिचित है। इसमें काल और स्थानगत भेदों को आत्मसात् करने की अपूर्व क्षमता है। इसकी संस्कृति और सभ्यता में वृद्धि महान शिक्षकों (गुरुओं) के समय-समय पर दिये गये उपदेशों की व्यवहारिकता, से होती रही है। अतः आज भी समाज निर्माण उत्थान एवं विकास में शिक्षक समाज का विशेष महत्व रहा है। सेमिनार 'अध्यापक शिक्षा का नवीनीकरण' में डॉ0 रामशकल पाण्डेय और प्रो0 मलिक (गिरावट) तथा प्रो0 टी0 पति आदि ने शिक्षकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आज शिक्षक की गुणवळाा, दक्षता तथा चरित्र आदि में गिरावट आती जा रही है। इस प्रकार हमारी शिक्षा व्यवस्था बालवाड़ी, पूर्वप्राथमिक, प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक व्यवस्था में बँट जाती है जिसका उद्देश्य है कि बच्चा अपने शैशवाकाल, बाल्यकाल, पूर्व किशोरावस्था तथा किशोरावस्था तक अपनी मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा तथा एक अन्य किसी भाषा में पारंगत हो जाय और उसकी अभिव्यक्ति खुल जाये। माध्यमिक शिक्षा किशोरावस्था से जुड़ती है और शिक्षा व्यवस्था की मेरुरज्जू होती है। एस0एन0 मुखर्जी माध्यमिक शिक्षा को तीन भागों में बॉटते है।

1. स्थिति के रुप में माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो प्राथमिक शिक्षा के बाद आती है।
2. प्रकार के रुप में माध्यमिक शिक्षा वह है जिसका सम्बन्ध निश्चित व बौद्धिक वस्तुओं के विभाजीकरण से है इसके भी तीन रुप है- भ्रमित नाम, मानवीयता तथा उदार शिक्षा
3. स्तर के रुप में माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है। जिसे हम बौद्धिकता की कसौटी कह सकते है क्योंकि इसी पर विश्वविद्यालय शिक्षा आश्रित है। वैश्विीकरण के वर्तमान दौर में शिक्षकों को अपने व्यवसाय के सामर्थ को सिद्ध करने के लिए ज्ञान, कौशल, दक्षता, मूल्य सम्बन्धी योग्यताओं को अधिक परिवर्तन करने की आवश्यकता है शिक्षण सर्वाधिक सामान्यजनक व्यवसायों में से एक है शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी ढंग से दक्षता के स्तर पर खरा उतरने व उपयुक्त कौशल योग्यताओं तथा व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता से सम्पन्न होना था। व्यावसायिक शिक्षा विकास शैक्षिक सुधार के लिए लगभग हर आधुनिक प्रस्ताव में एक महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षा का केन्द्रीय घटक विद्यार्थी है और उन्हें सही दिशा निर्देशन करने वाला प्रमुख घटक अध्यापक है। लर्निग टू बी (1972) यूनेस्को में कहा गया है 'शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षण' मानव व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के खोज एवं सम्मान की दृष्टि से संचालित किये जाने चाहिए। व्यावसायिक स्थितियों जिनमें कि शिक्षकों को शिक्षित किया जाना है उनमे गहन परिवर्तन की आवश्यकता है, ताकि मात्र पुराने ढेर के पाठ्यक्रमों को छात्रों तक पहुँचाने विशेषज्ञ न बनकर सही शिक्षा प्रदान बन सकें। इण्टरनेशनल

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अध्ययन के उद्देश्य:- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षक[illegible] के शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।"

शोध अध्ययन की परिकल्पना:- उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गई थी कि "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

शोध के प्रकार:- प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। बेस्ट के शब्दों में, "विवरणात्मक अनुसंधान वर्तमान स्थिति की व्याख्या [illegible] विवेचना प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध उन स्थितियों तथा सम्बन्धों से है जिनका अस्तित्व वर्तमान में है, अथवा उन व्यवहारों से है जो कि प्रचलित [illegible] उन दृष्टिकोणों अथवा अभिवृत्तियों से है, जिनका प्रचलन है, व ऐसे प्रक्रमों से है, जोकि सक्रिय है, तथा अपने प्रभावों से है जिन्हें अनुभव किया जा [illegible] है, अथवा उपलब्धियों से है, जोकि विकासशील है।

स्पष्टतः ऐसे अनुसन्धान का स्वरूप अत्यधिक व्यापक, विस्तृत तथा विषम होता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अध्ययन जैसे सर्वेक्षण, विकासात्मक अध्ययन, व्यक्तिवृत्त अध्ययन, अन्तर्वस्तु अध्ययन, जनमत अध्ययन, सहसम्बन्ध अध्ययन, व उन्नति अध्ययन आदि सम्मिलित रहते हैं। इन विभिन्न तथा विभि[illegible] अध्ययनों को एक ही प्रकार के अनुसंधान के अन्तर्गत सम्मिलित करना निश्चिततः सुविधाजनक तथा वैधानिक है।

शोध विधि:- प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित घटनाओं का विश्लेषणात्मक विवरण होता है इसम[illegible] सर्वेक्षण विधि के तहत आंकड़ों का संकलन करते हुए निरीक्षण किया जाता है। जिसमें आंकड़ों की सहायता से वर्तमान घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है। सर्वेक्षण का इंगलिश रूपान्तर Survey दो शब्दों Sur+vey से मिलकर बना है। मूल रूप से, Sur (Sor) तथा vey (veeir) पर आधारित है, जबकि Su[illegible] का अर्थ over तथा veeir का अर्थ to look होता है। इस प्रकार Survey का सम्मिलित मूल अर्थ 'ऊपर से देखना' अवलोकन अथवा अन्वेषण होता है। शब्द कोश के अनुसार भी सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण होता है, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसक[illegible] प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है, जैसे स्कूलों का सर्वेक्षण।

समष्टि:- प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि समस्त अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक थे। समष्टि की विशेषतायें निम्नलिखित है। समष्टि परिमित तथ[illegible] अपरिमित दो प्रकार की होती है। जिसमें प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि परिमित प्रकार की है क्योंकि शिक्षकों की संख्या सीमित होती है। प्रस्तुत अध्ययन क[illegible] समष्टि समांगी प्रकार की है क्योंकि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का चयन की योग्यता का मानक एक ही होता है। किसी अध्ययन की वह सम्पूर्ण इंका[illegible] समष्टि कहलाती है। जिस पर शोध कार्य आधारित होता है।

प्रतिदर्श:- प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श का आकार 400 होगा। किसी बड़ी राशि में से चुनी हुई एक छोटी सी मात्रा को प्रतिदर्श या नमूना है। यह मान[illegible] जाता है कि प्रतिदर्श के सांख्यिकीय गुण पूरी राशि के सांख्यिकीय गुणों का प्रतिनिधित्व करते है।

न्यादर्श:- शोधकर्त्ता द्वारा समय धन के अभाव के कारण आगमनात्मक प्रविधि अपनाते हुए समष्टि से एक छोटा समूह अध्ययन हेतु चयनित किया जात[illegible] है जिसे न्यादर्श कहते है। न्यादर्श पूरी समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन में जौनपुर जनपद के यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा कुल चार सौ [illegible] अध्यापकों का चयन किया गया था जिनके वितरण का आधार क्षेत्र, लिंग, विषय तथा विश्लेषण था। अनुसंधान में प्रायः प्रचलित विधि का प्रयोग सम्भव [illegible] नहीं होता, क्योंकि इस विधि के द्वारा अध्ययन धन, समय व सुविधा के दृष्टिकोण से सापेक्षिकतः अत्यधिक खर्चीला व जटिल होता है। इसके विपरीत व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से अप्रचलिक विधि द्वारा अध्ययन पर्याप्त मात्रा में सुगम, सरल, अल्प-व्ययी तथा शुद्ध रहता है। अप्राचलिक विधि[illegible] के अध्ययन का आधार प्रतिदर्श होता है।

दृष्टिकोण

प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिलम्ब रहता है। पी0 वी0 यंग के शब्दों में एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु चित्र होता है।

यदि समष्टि का स्वरुप सजातीय रहता है, तब प्रतिदर्श के चयन में विशेष कठिनाई नहीं होती, परन्तु जब समष्टि का स्वरुप विषम जातीय रहता है, तब प्रतिदर्श की इकाईयों के चयन के लिए प्रतिचयन प्रक्रिया का उपयोग करना पड़ता है।

तालिका -न्यादर्श वितरण

विवरण	ग्रामीण		शहरी		योग
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	
	136	69	90	105	400
योग	205		195		400

तालिका -न्यादर्श में चयनित माध्यमिक विद्यालय का वितरण-

क्र0सं0	माध्यमिक विद्यालय	संख्या
	राजा हरपाल सिंह इण्टर कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर	38
	तिलकधारी इण्टर कालेज, जौनपुर	35
	राजा श्री कृष्णदत्ता इण्टर कालेज, जौनपुर	30
	नगर पालिका इण्टर कालेज जौनपुर	25
	गवर्नमेंट्स गर्ल्स इण्टर कालेज, जौनपुर	30
	मुक्तेश्वर वालिका इण्टर कालेज, जौनपुर	35
	वी. आर. पी. इण्टर कालेज, जौनपुर	30
	हरिहर सिंह पब्लिक इण्टर कालेज, जौनपुर	32
	गोवर्द्धन इण्टर कालेज, मुफ्तीगंज, जौनपुर	35
	सिरसी इण्टर कालेज, वरईपार, जौनपुर	30
	सिरसी इण्टर कालेज, वरईपार, जौनपुर	22
	सल्तनत बहादुर इण्टर कालेज, बदलापुर, जौनपुर	32
	मो0 हसन इण्टर कालेज, जौनपुर	26
ा		400

शोध उपकरण:- प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु दो शोध उपकरण मानकीकृत किये गये थे। प्रयुक्त सॉख्यिकी तकनीकी:- प्रस्तुत अध्ययन CR मूल्य 2 x 2 प्रसरण विश्लेषण सारणी तथा प्रोडेक्ट मूमेंन्ट सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग आंकड़ों के विश्लेषण हेतु किया गया जिनके विवरण लिखित है।

शिक्षण दक्षता मापनी:- शोधकर्त्ता ने स्वनिर्मित उपकरण शिक्षण दक्षता मापनी का प्रयोग किया है जिसमें अन्तिम रुप से कुल 45 कथन चयनित हुये का चयन का आधार (t) टी परीक्षण था। जो भी सार्थकता स्तर 0.05 पर आया उसे ही चयनित किया गया। प्रत्येक कथन के तीन विकल्प सहमत, श्चित व असहमत थे। इसका फलांकन सहमत पर 02, अनिश्चित पर 01 तथा असहमत पर 0 अंक था। इस प्रकार पूरी मापनी पर न्यूनतम 0 और कतम 90 अंक आता है। इसकी विश्वसनीयता गुणांक अर्द्धविच्छेद विधि द्वारा 0.72 प्राप्त हुयी है और विशेषज्ञ वैधता गुणांक 0.84 प्राप्त हुआ है। इसका क प्रतिशतांक है। इस प्रश्नावली पर प्रतिक्रियायों की व्याख्या का आधार निम्नलिखित सारणी के अनुसार है।

तालिका-व्याख्यात्मक सारणी

निम्न	निम्न	सामान्य	उच्च	अति उच्च
	20-40	40-60	60-80	80-90

निर्धारित उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण तथा व्याख्या:- प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि ''माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला कों के शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु परीक्षण के लिये शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि ''माध्यमिक र पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' इस शून्य परिकल्पना के विश्लेषण के लिये निम्नलिखित विश्लेषण का बनी है।

तालिका -पुरुष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण दक्षता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य विश्लेषण तालिका-

समूह	*संख्या*	*मध्यमान*	*मानक विचलन*	*मानक त्रुटि*	*सी0आर0मूल्य*	*P*
पुरुष शिक्षक	226	63.48	18.36			
महिला शिक्षक	174	68.31	22.24	2.08	2.32	.05

df (398) at .05 =k 1.97

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षकों का शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का मध्यमान 63.48 और मानक विचलन 18.36 है और महिला शिक्षिकाओं के लिये मध्यमान 68.31 और मानक विचलन 22.24 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 2.08 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य 2.32 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या (398) के सार्थकता स्तर .05 पर सारणी मान 1.97 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि महिला शिक्षकों में पुरुष शिक्षकों की तुलना में शैक्षिक दक्षता अधिक होती है। इस परिणाम का समर्थन रवि (2021) का अध्ययन करता है। इस परिणाम के सम्भवतः कारण है कि शिक्षण व्यवसाय मातृत्व व अपनेपन से अधिक संचालित होता है जिसमें महिलायें ही अग्रणी हो सकती हैं।

शोध निष्कर्षः- विश्लेषणोपरान्त प्रस्तुत अध्ययन का शोध निष्कर्ष प्राप्त किया गया। महिला शिक्षकों में शिक्षण दक्षता पुरुष शिक्षकों की तुलना में उच्च स्तर की होती है।

शैक्षिक निहितार्थ-शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्याय संगत और न्यायपूर्ण समाज के लिऐ विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिये मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के सन्दर्भ में भारत की सतत् प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। सार्वभौमिक उच्चतम स्तरीय शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्धि, प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिये किया जा सकता है। अगले दशक में भारत दुनियां का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवावों को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अलैक्जैंड्रिया (2019): 'जबाबदेही व प्रतिबद्धता में कमी प्रशिक्षण की प्रभावशीलता बाधा डालती है' ATD -2019।
- अब्द रजाक, एन (2007): "शिक्षक प्रतिबद्धता" टीचर्स ऐंड टीचिंग पर रिसर्च की इन्टरनेशनल हैंडबुक पी0पी0 343-360।
- आलस एन0 (2009): "छात्र उपलब्धि में लाभ पर पेशेवर विकास का प्रभाव" http/files.eric.ed.gov/full text/ Ed. 544।
- अल्टुन एम0 (2017): "प्रभाव में जुनून की भूमिकाई शिक्षण और सीखना अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका सामाजिक विज्ञान और शैक्षिक अध्ययन 3(3) 155-158.।
- आरोसन डी0 (2007): "शिकागों पब्लिक हाईस्कूलों में शिक्षक और छात्र, उपलब्धि" जर्नल ऑफ लेबर इकोनामिक्स 25 (1) 99-135।
- अदिवा (2007):"देशों में शिक्षक गुणवत्ता अवसर अंतराल और उपलब्धियां" शैक्षिक शोधकर्त्ता 36 (7), 369-387।
- आलम महमूद मोहम्मद (दिसम्बर 2018): "तुलनात्मक अध्ययन कुल जनसांख्यिकीय चरों में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन" DIP-18.01-105/20180604, DOI -10.25215/0604.105